₹ 10/-

जीवनपथ हिन्दी

JEEVANPATH HINDI

Vol. No. 13, Issue No. 11 (₹ १०/– प्रचार के लिए) Mumbai, 15th June 2025

Website : www.jeevanjyot.in Total 36 Pages E-mail : jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया ।

श्री जलाराम अन्नदान क्षेत्र... जय श्री जलाराम बापा'
समाज के लोकहित की भावना में पूर्ण रूप से गैरव्यावसायिक
मुखपत्र **जीवन ज्योत® कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट** की भेंट

तस्वीर बोल रही हैं मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा-खेतवाडी) प्रेरित जीवदया की

नाली में घूम रहे मूस (चूहे) के काटने से घायल हुए कबूतर का जीवन ज्योत जीवदया विंग द्वारा तुरंत इलाज किया गया।

गरीब, निराधार कर्करोगग्रस्त मरीजों को अन्नक्षेत्र में, जीवदया में और टॉयबैंक में अनुदान देने वाले और इस अंक के सौजन्यदाता

मीनाबेन उमंग ध्रुव और नीरूबेन दुलाभजी ध्रुव (बोरीवली)

तस्वीर बोल रही हैं विग डोनेशन की

बाल (केस) स्त्री का सौंदर्य होता है। लेकिन जब कीमोथेरेपी के इलाज के दौरान वह अपने बाल खो देती है तब उसके चेहरे का सौंदर्य चला जाता है। धन्य है समाज की वीर महिलाओं को जो जीवन ज्योत संस्था मे अपने लंबे बाल को दान में देते है। उस बाल में से बनी हुई विग पाकर कैन्सरग्रस्त महिला आनंदित हुई ।

तस्वीर बोल रही हैं मानवता की

दानदाता के सहयोग से एक पैरविहीन मरीज को वॉकर और कृत्रिम पैर नि:शुल्क उपलब्ध कराया गया।

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

विशेष सूचना : यह पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट के रूप में भेजी है । इस पुस्तिका को आप अपने मित्र-परिवार को पढ़ने के लिए दीजिए, ताकि उनसे कॅन्सर पीड़ित रोगियों को आपके अनुदान व सहयोग का कवच मिल सके । आपकी इस सेवा के लिए हम आपके चिरकाल तक ऋणी रहेंगे ।

स्थापना : १९८३

जीवनपथ

पथदर्शक : श्री खेतशी मालशी सावला

मार्गदर्शक : श्री बुद्धिचंद मारू

मुद्रक/स्थापक/प्रकाशक : हरखचंद सावला

संपादक : चन्द्रा शरद दवे

सह संपादक : आशा दसोंदी

-: शाखा कार्यालय :-

कोलकता कार्यालय

विनेश शेठ (गोपाल), ५, तल मजला,
खीरु प्लेस, कोलकता- ७०० ०७२. टे.: २२१७७८३४

जलगांव कार्यालय

शाह राघवजी लालजी सतरा (गुंदाला)
१०९, पोलनपेथ, जलगांव- ४२५००१
दूरध्वनि:०२५७-२२२४१५६ मो: ०९६७३३६४२९०

सांगली - कोल्हापुर

मीना जेठालाल मारू (हालापर)
मो. ७७०९९००४३३

नालासोपारा कार्यालय

१२, लक्ष्मी शोपिंग सेन्टर, राधा-कृष्णा होटेल
के बाजु में, तुलींज रोड,
नालासोपारा (ईस्ट)
खूश्बु गाला - मो. ८९२८७६५३०१

(कायदाकीय अधिकार क्षेत्र मुंबई रहेगा)

-: मुख्य कार्यालय :-

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एण्ड केअर ट्रस्ट

५/६ कोंडाजी चाल, जेरबाई वाडिया रोड,
टाटा हॉस्पिटल के पास, पेट्रोल पंप के सामने, परेल,
मुंबई-१२. मो.: ९८६९२०६४००/९०७६१६९३५५

इस पुष्प की पंखुडियाँ

सम्पादक की लेखनी से... ४
भजन - मत भूलो श्री श्याम नाम को ७
व्यक्ति विशेष -सिल्वियो बर्लुस्कोनी (१९३६) ९
पथ के दावेदार ११
दूध और खून १५
कैंसर और इसका कारण १६
खजाने के वचनों में दंभ १७
मूरखराज १९
मेथी चिकित्सा २३
काव्य २७
ताल से ताल मिला २८
व्यक्ति के गुणों ३०
कल्पना : आपके स्वचलित सफलता - मेकेनिज्म को चालू करने वाली चाबी ३१
हास्य का हसगुल्ला ३४

अंक में दिए गए उपचार और सलाह का उपयोग अनुभवी की सलाह लेकर ही करें ।

अब वेबसाइट पर "जीवनपथ" पढ़ सकते हैं

www.jeevanjyot.in

ट्रस्ट रजि. नं. P.T.R.E.-17259 (M) - F.C.R.A. 083780700

❂ TI.T. EXEMPTION, DIT (E), MC/8E/80G/53(2009-11)

❂ CSR Registration No. CSR 00002659 ❂ **Email :** jeevan_jyot@yahoo.in

ॐ अरिहंते नमो नमः
संसार के प्रत्येक जीव का हर क्षण मंगलमय हो।

संपादक की लघु लेखनी से...

प्रिय मान्यवर पाठको,

संसार में ४ तरह के लोग

(१) अँधेरे से अँधेरे की ओर : ऐसा व्यक्ति जिसके जीवन में अँधकार है। यानि गरीबी है, परेशानी है, व्याकुलता है। फिर भी वह क्रोध जगाता है, द्वेष जगाता है। तथा अपने दुःख का जिम्मेदार दुसरो को ठहराता है, और मन ही मन दुसरो को गाली देता है। दुःख को भुलाने के लिए नशापान करता है।

ऐसा व्यक्ति आज तो दुखी है ही, लेकिन आगे के लिये भी दुःख के बीज ही बो रहा है। यानि अँधेरे से अँधेरे की तरफ बढ़ रहा है।

(२) अँधेरे से प्रकाश की ओर : ऐसे व्यक्ति के जीवन में अँधेरा तो है, लेकिन भीतर प्रज्ञा जाग रही है। वो ये सोचता है, की यह जो कुछ भी मेरे साथ हो रहा है, वो किसी पूर्व दुष्कर्म के कारन हो रहा है, किसी दूसरे को क्या दोष दूँ? ये तो बेचारे माध्यम बन गए है।

तो अपना वर्तमान कर्म सुधारता है, ओरो के प्रति मैत्री, करुणा, सद्भावना जगाता है। किसी के प्रति क्रोध नही, द्वेष नही। तो आगे के लिये उसका जीवन प्रकाश ही प्रकाश है।

(३) प्रकाश से अँधेरे की ओर : ऐसा व्यक्ति प्रकाश में है, यानि धन है, प्रतिष्ठा है, पर अहंकार है, सबसे घृणा करता है।

देखो मैं कितना बुद्धिमान हूँ, कितना मेहनती, ऐसा मानता है। तो वह दुःख के बीज बो रहा है। भविष्य में अँधेरा ही अँधेरा होगा।

(४) प्रकाश से प्रकाश की ओर : ऐसा व्यक्ति प्रकाश में है, पर साथ साथ प्रज्ञा भी हैं कि वो ये सोचता की यह जो कुछ प्राप्त हुआ किसी पूर्व पुण्यकर्म से हुआ। सदा रहने वाला नही।

वह लोगो की सेवा करता है, उनमे सामर्थ्य के अनुसार सहर्ष बाँटता है। ओरो के प्रति मंगल कामना करता है। तो उसका आगे आने वाला जीवन प्रकाश ही प्रकाश होगा..! ■

-: दानवीर दाताओं के लिए विशेष सूचना :-

दानवीर दाताओं द्वारा जीवन ज्योत संस्था के बैंक खाते में दान करने के बाद, जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय पर ईमेल : jeevan_jyot@yahoo.in या वॉट्सअप नं. ९८६९२०६४०० पर अपना नाम, पत्ता, पॅनकार्ड नं. और दान कोर्पस या सामान्य में हैं यह जानकारी दे ।

दाता के उपरोक्त विवरण के अभाव में, संस्था को आपके दान की राशि पर ३५% कर का भुगतान करना पड़ता है। जिसके कारण कैंसरग्रस्त मरीज़ों के लिए उपलब्ध धनराशि में कमी आती है ।

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय से विदेश से अनुदान स्वीकार करने के लिए विशेष स्वीकृति प्राप्त हुई है। अतः विदेश से दान देने के इच्छुक दानवीर दाताओंसे FCRA का बैंक खाता नंबर संस्था के कार्यालय से प्राप्त करने का अनुरोध है । प्राप्त जानकारी के अनुसार कोई अज्ञात व्यक्ति जीवन ज्योत संस्था के नाम का उपयोग करके डुप्लिकेट रसीद और प्रमाणपत्र पर अनुदान एकत्र कर रहा है। यदि दाताओं को कोई संदेह हो, तो अनुदान देने से पहले कृपया जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय में संपर्क करें ।

बैंक का नाम / IFSC नं.	खाता नं.	ब्रांच
एच.डी.एफ.सी. बैंक HDFC0000357	14731450000017	परेल

संस्था के अनेक समाजसेवी प्रकल्पों में से कुछ प्रकल्प दाताओं के नाम पर कार्यान्वित हैं

१)	श्रीमती नलिनीबेन बिपीनचंद्र मेहता	: कैंसर डिटेकशन सेन्टर
२)	श्रीमती चंपाबेन झुमखराम शाह	: कोलोस्टोमी बैग सेन्टर
३)	श्रीमती साकरबेन एल. डी. शाह (बिदड़ा)	: जलाराम अन्नदान क्षेत्र
४)	श्रीमती पुष्पावंती किशोरभाई भोजराज (मेराउ)	: ऐम्ब्युलन्स् सेवा
५)	श्रीमती नयनाबेन बिपीनभाई दाणी	: वरिष्ठ नागरिक आइकार्ड सेवा
६)	श्रीमान महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा)	: ब्लैक मोलाइसीस दवा
७)	श्रीमान डुंगरशीभाई मुलजी मारू (काराघोघा)	: आधुनिक उपकरण.
८)	कु. साईशा - नाईशा दाणी	: टॉय बैंक
९)	मातुश्री खेतबाई देवराज मारु (हालापुर)	: चेरी. डिस्पेन्सरी
१०)	मातुश्री कांताबेन चुनीलाल गगलदास शाह (सेरीसा)	: जीवदया
११)	मातुश्री चंद्राबेन जयंतिलाल चत्रभुज मोदी *और* मातुश्री लाछबाई हीरजी करमशी भेदा (समाघोघा)	: हल्दी दूध योजना
१२)	श्री हरीराम माथुराम अग्रवाल (चेम्बुर)	: फल वितरण
१३)	मातुश्री सुशीलाबेन कांतिलाल दाणी (हरसोल)	: एनिमल ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१४)	मातुश्री ललिताबेन बिहारीलाल शाह (सांताक्रुझ)	: ओजोन थेरेपी सेन्टर
१५)	मातुश्री ताराबेन जयंतिलाल वाघाणी (माटुंगा)	: जीवन ज्योत ड्रग बैंक
१६)	देविका सोमचंद लालका (अमलनेर) (स्व. कु. हंसाबेन रतनशी लोडाया)	: कॉम्पिटिशन् योजना
१७)	मयुरभाई महेता और जितेन्द्र पारेख	: ऐम्ब्युलन्स् मेईन्टनन्स
१८)	मातुश्री इन्दुमति महेन्द्र गांधी (लिंबोद्रा-बोरीवली)	: पेथोलोजी सेन्टर
१९)	श्रीमती मंजुलाबेन नटवरलाल शाह (हरसोल)	: ब्लड बैंक
२०)	श्रीमान नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल)	: मेडिकल कैम्प
२१)	श्रीमती नलिनीबेन रसीकभाई जादवजी शाह	: ऐम्ब्युलन्स् सेवा
२२)	स्व. श्री इन्दरचंद लख्खीचंद खींवसरा (धुलिया)	: पस्ती योजना
२३)	डॉ. रमेश मंत्री	: अनाज वितरण
२४)	श्रीमति उषाबेन मणिलाल गाला (कंडागरा-गोरेगाम)	: जलाराम अन्नक्षेत्र
२५)	श्रीमती साकरबेन प्रेमजी चेरीटेबल ट्रस्ट (वर्ली)	: केमोथेरेपी विभाग

भजन

मत भूलो श्री श्याम नाम को

(तर्ज : क्या मिलिए ऐसे लोगों से...)

मत भूलो श्री श्याम नाम को, जाना सागर पार है।
जीवन है छोटी सी नैया, श्याम नाम पतवार है ।। टेर ।।

लेकर प्रभु का नाम जगत में, कितनों ने भव पार किया।
श्याम नाम की ज्योति ने कितने, जीवन को गुलजार किया।
स्वार्थ की दुनिया में अपना ये सच्चा आधार है।
जीवन है छोटी सी नैया.....

श्याम नाम के भजने का तो, कोई निश्चित काल नहीं।
जब भी मौका मिले सुमर ले, प्रभु सा दीन दयाल नहीं।
प्रभु से ज्यादा प्रभु के नाम में शक्ति की भरमार है।
जीवन है छोटी सी नैया....

जीवन नैया सौंप प्रभु को, तुम प्यारे अलमस्त बनो ।
शरणागत की हर पल रक्षा, करते बाबा श्याम सुनो।
भक्तों अब किस बात का डरना, रक्षक जब सरकार है।
जीवन है छोटी सी नैया...

बिपीनभाई दाणी (हरसोल) एकता परिवार (I.G.) माटुंगा की प्रेरणा से

दाताओं के नाम	एरिया	योजना	रुपया
☛ स्व. शामलदास जमनादास शाह के आत्मश्रेयार्थे			
ह. भावेश महेन्द्र शाह (हरसोल)	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. शांताबेन शामलदास शाह के आत्मश्रेयार्थे			
ह. भावेश महेन्द्र शाह (हरसोल)	बोरीवली	जीवदया	५,०००/-
☛ स्व. अरविंदभाई वल्लभदास सोनेचा के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हंसाबेन अरविंदभाई सोनेचा परिवार	कांदिवली	दवाइयाँ	२,०००/-
☛ स्व. महेन्द्रभाई मणिलाल गांधी (लिंबोद्रा) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. ईन्दुबेन, अल्पेश, संजय गांधी परिवार	बोरीवली	जीवदया	१,२००/-
☛ ईन्दीराबेन चंपकलाल सोनी	एहमदाबाद	हल्दीदूध	१,०००/-
☛ स्व. नटवरलाल बुलाखीदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. मंजुलाबेन नटवरलाल शाह परिवार	कांदिवली	जीवदया	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. कांतिलाल नगीनदास शाह (हरसोल) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. कांतिलाल नगीनदास शाह परिवार	भायंदर	दवाईयाँ	१,०००/-
☛ स्व. कमलाबेन और स्व. बेचरदास दोशी के आत्मश्रेयार्थे			
ह. दिलीप बी. दोशी	मुलुंड	दवाइयाँ	५००/-
☛ स्व. शारदाबेन और स्व. चिमनलाल साकळचंद शाह (उवारसद) के आत्मश्रेयार्थे			
ह. हेमा प्रदीप शाह	पूना	जीवदया	५००/-

व्यक्ति विशेष

सिल्वियो बर्लुस्कोनी (१९३६)

सिल्वियो बर्लुस्कोनी ने इटली का पहला निजी टी.वी. नेटवर्क चैनल-५ शुरू किया था। इटली के सिल्वियो बर्लुस्कोनी संसार के अमीरों की सूची में १६९वें स्थान पर आते हैं और उनके पास ५.९ अरब डॉलर की संपत्ति है।

२९ सितंबर १९३६ को इटली के मिलान शहर में जन्मे सिल्वियो बर्लुस्कोनी के पिता बैंक में क्लर्क थे । सामान्य परिवार में पले-बढ़े सिल्वियो बर्लुस्कोनी ने अपनी मेहनत और बुद्धि के दम पर दौलत हासिल की। स्कूल में भी वे व्यवसाय के बारे में ही सोचते रहते थे । वे कठपुतलियों के कार्यक्रम आयोजित करते थे और विद्यार्थियों से प्रवेश शुल्क लेते थे। वे पैसे लेकर दूसरे विद्यार्थियों का होमवर्क भी कर देते थे। मिलान विश्वविद्यालय में वकालत की पढ़ाई की फीस जुटाने के लिए उन्होंने वैक्यूम क्लीनर बेचे और फोटोग्राफी का काम भी किया। उनकी पढ़ाई पूरी होने के बाद उनके पिता ने उनसे अपने बैंक में नौकरी करने को कहा, लेकिन सिल्वियो नौकरी के बंधन में नहीं बँधना चाहते थे । वे तो स्वयं का ऐसा व्यवसाय शुरू करना चाहते थे, जिसमें वे अपनी महत्वाकांक्षाएँ पूरी कर सकें और अपने सपने साकार कर सकें।

सिल्वियो बर्लुस्कोनी को ज़मीन-जायदाद के क्षेत्र में सुनहरा अवसर दिखा। उन्होंने रियल एस्टेट के क्षेत्र में अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। उन्होंने १९६२ में अपने पिता के बैंक से कर्ज लेकर एलिनोर्ड नामक रियल एस्टेट एंड डेवलपमेंट फर्म बनाई, जिसने मिलान के उत्तरी उपनगर मिलानो २ में ४,००० फ्लैट्स बनाए । रियल एस्टेट में भारी मुनाफा कमाने के बाद उन्होंने मीडिया

की दुनिया में कदम रखा। १९७५ में उन्होंने फ़िनइन्वेस्ट कंपनी शुरू की, जो इटली के आधे फिल्म उद्योग को फाइनेंस करती है।

१९८० में उन्होंने चैनल-५ शुरू किया, जो इटली का पहला राष्ट्रीय निजी टी.वी. नेटवर्क था। इसके बाद उन्होंने १९८२ में इटली-१ और १९८४ में नेट-४ चैनल भी शुरू किए। इस बीच वे ३० पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाले इटली के सबसे बड़े पब्लिशिंग हाउस मोंडाडरी को भी खरीद चुके थे। उन्होंने स्ट्रैंडा डिपार्टमेंट स्टोर चेन भी शुरू की, जो इटली की सबसे बड़ी स्टोर चेन बन गई। वे बैंकिंग और बीमा समूह मेडियोलेनम के स्वामी हैं तथा बीमा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सक्रिय हैं । यही नहीं, १९९३ में उन्होंने अपनी राजनीतिक पार्टी फोर्जा इटैलिया बनाई और वे तीन बार इटली के प्रधानमंत्री रह चुके हैं। अपनी व्यापारिक सूझ-बूझ और नवाचार की बदौलत ही सिल्वियो बर्लुस्कोनी इतने सफल हुए हैं। ■

मानवता के साद को मिला हुआ प्रतिसाद

नाम	एरिया	रुपया
☆ विजय नारायण भीमे	थाणे	१०,०००/-
☆ विद्या नाडकर्णी	अंधेरी	५,०००/-
☆ संदिप गाडीगाँवकर	लोअर परेल	५,०००/-
☆ सोनल राजेन्द्र बोरकर, ह. बोरकर परिवार	मुलुंड	२,०००/-
☆ शामसुंदर सीताराम नेवरेकर	वडाला	२,०००/-
☆ रविन्द्र पोरे	भायखला	२,०००/-
☆ सुधीर विष्णु परकाले	कालाचौकी	२,०००/-
☆ स्व. मोहन पी. कुलकर्णी ह. दिप्ती डी. पंडित	सायन	१,०००/-

कहानी

(गतांक से आगे)

पथ के दावेदार

– शरतचंद्र

सुमित्रा बोल नहीं सकती थी, फिर भी बोली - ''जो कुछ भी जानते हैं, वही दो शब्दों में कह दीजिए अपूर्व बाबू ! समय बरबाद मत कीजिए।''

अपूर्व ने सबके मुँह की ओर देखा। भारती मुँह फेरे खड़ी थी, इसलिए उसका अभिमत समझ में नहीं आया, लेकिन गोरे सरदार के मन का भाव समझ में आ गया। बोलने के लिए अपूर्व उठ खड़ा हुआ, उसके होंठ कांपने लगे, पर उन दोनों कम्पित अधरों में से बंगला, अंग्रेजी, हिन्दी- कोई भाषा भी व्यक्त नहीं हुई।

तलवलकर उठ खड़ा हुआ। सुमित्रा को लक्ष्य कर ''मैं बाबूजी का मित्र हूँ और हिन्दी जानता हूँ। यदि आदेश पाऊँ तो उनका वक्तव्य चिल्ला-चिल्लाकर सबको सुना दूँ।'' भारती ने मुँह घुमाकर देखा। सुमित्रा विस्मित द्रष्टि डाले स्थिर होकर बैठी रही। और इन दोनों नारियों के घूरते नेत्रों के सम्मुख लज्जित, अभिभूत, वाक्यहीन अपूर्व स्तब्ध होकर मुँह नीचा किए हुए जड़वत बैठ गया।

रामदास ऊँचे कण्ठ से कहने लगा- ''भाइयो! मुझे बहुत सी बातें कहनी थीं, लेकिन इन सबों ने बलपूर्वक हम लोगों का मुँह बन्द कर दिया है।'' इतना कहकर उसने पुलिस सवारों पर संकेत किया- ''इन विलायती कुत्तों को जिन लोगों ने हमारे और तुम्हारे विरुद्ध ललकारा है, वे तुम्हारे कारखानों के मालिक हैं। वह नहीं चाहते कि तुम्हें, तुम्हारी दुख-दुर्दशा की बातें बताएं। तुम उनके कारखाने चलाने और बोझा ढोने वाले जानवर हो! लेकिन फिर भी तुम उनकी ही तरह मनुष्य हो। उसी प्रकार पेटभर भोजन करने का, उसी तरह आनन्द करने का अधिकार तुमको भी भगवान ने दिया है। यदि इस सत्य को समझ सको कि तुम लोग भी मनुष्य हो, तुम लोग चाहे जितने दुखी, जितने दरिद्र,

जितने अशिक्षित क्यों न हो, फिर भी मनुष्य हो। तुम्हारी मनुष्यता के. दावे को किसी बहाने कोई भी नहीं रोक सकता। यह चन्द कारखानों के मालिक तुम्हारे सामने कुछ नहीं हैं। यह धनिकों के विरुद्ध दरिद्रों की आत्मरक्षा की लड़ाई है। इसमें देश नहीं है, जात नहीं है, धर्म नहीं है, मतवाद नहीं है - हिन्दू नहीं है, मुसलमान नहीं है, जैन, सिख कोई कुछ भी नहीं है- केवल है धनोन्मत्त मालिक और श्रमिक वर्ग । तुम्हारी शारीरिक शक्ति से वे डरते हैं, तुम्हारी शिक्षा को वे संशय की नजर से देखते हैं, तुम लोगों के ज्ञान पाने की आशंका को देखकर उनका रक्त सूख जाता है। अक्षम, दुर्बल, मूर्ख, तुम लोग ही तो उनके विलास व्यसन के एकमात्र सहारे हो। इस सत्य को हृदयंगम करना क्या तुम लोगों के लिए इतना कठिन है? और उन्हीं बातों को मुक्त कण्ठ से व्यक्त करने के अपराध में ही, क्या आज इन गोरों के सामने हमारी लांछना की सीमा न रहेगी? दरिद्रों की आत्मरक्षा की लड़ाई में तुम लोग क्या अपनी पूरी शक्ति न जुटा सकोगे?''

गोरा सरदार भाषण का मर्म कुछ भी न समझ सका, लेकिन सम्भवतः श्रोतावर्ग के मुँह और आँखों की उत्तेजना देखकर स्वयं भी उत्तेजित हो उठा। अपनी रिस्टवाच की ओर वक्ता की दृष्टि आकर्षित करते हुए बोला- ''और पांच मिनट का समय है, आप जल्दी खत्म कीजिए।''

तलवलकर ने कहा- ''केवल पांच मिनट । उससे जरा भी अधिक नहीं। मेरे वंचित भाइयो! तुम्हारे निकट मैं विनती करता हूँ - हम लोगों पर तुम लोग कभी अविश्वास न करना। शिक्षित कहकर उच्च वंश का कहकर कारखाने में मजदूरी नहीं करता, इसलिए हम लोगों को संशय की नजर से देखकर तुम स्वयं अपना सर्वनाश कर बैठोगे । तुम लोगों को नींद से जगाने के लिए प्रथम शंखध्वनि, सब देशों में, सर्वकाल में, हमीं लोग करते आए हैं। आज शायद इस बात को न भी समझ सको, लेकिन इतना निश्चय समझो कि इन पथ के दावेदारों से बढ़कर तुम लोगों का अपना मित्र इस देश में और कोई नहीं है!''

उसका कण्ठ-स्वर शुष्क और कठिन होता जा रहा था, फिर भी जी-जान

से चिल्लाकर वह कहने लगा- ''मैं बहुत दिनों तक तुम लोग के बीच में रहकर काम कर चुका हूँ। हम लोगों को तुम लोग नहीं पहचानते हो, लेकिन मैं तुम लोगों को पहचानता हूँ। जिनको तुम लोग मालिक कहते हो, एक दिन मैं भी उनमें से एक था। वे किसी तरह से भी तुमको मनुष्य न होने देंगे! तुम्हें पशुओं की तरह रखकर ही वे तुम्हारे मनुष्यत्व के अधिकार को रोक सकते हैं, और किसी दशा में नहीं ! तुम लोग बदमाश हो, तुम लोग उच्छृंखल हो, तुम लोग इन्द्रिय-परायण हो, उनके मुँह से यही सब गालियां तुम लोग हमेशा से सुनते चले आ रहे हो। इसलिए जब कभी तुम लोगों ने अपने दावे को जताया है, तभी तुम लोगों के सभी प्रकार के दुख और कष्टों के मूल में, तुम लोगों के असंयत चरित्र को ही जिम्मेदार ठहराते हुए वे तुम्हारी सर्व प्रकार की उन्नति को रोकते आए हैं, केवल इस झूठ को ही वे सर्वदा तुमको समझाते आए हैं कि खुद का भला न होने से किसी की कभी उन्नतिख नहीं हो सकती। लेकिन आज मैं तुम लोगों से असंकोच और बिल्कुल साफ-साफ कह देना चाहता हूँ कि उनकी यह युक्ति कभी भी सम्पूर्ण सत्य नहीं है। केवल तुम लोगों का चरित्र ही तुम्हारी अवस्था के लिए दोषी नहीं है। उनके असत्य का आज तुम लोगों को निर्भय होकर प्रतिवाद करना पड़ेगा। प्रबल कण्ठ से तुम लोगों को यह घोषणा करनी ही पड़ेगी कि केवल रुपया ही सबकुछ नहीं है।'' कहते-कहते उसका नीरस कण्ठ अत्यन्त प्रखर हो उठा। वह फिर कहने लगा - ''बिना श्रम के संसार में कुछ उत्पन्न नहीं होता, इसलिए श्रमिक भी ठीक तुम लोगों की तरह ही मालिक है-ठीक तुम लोगों की सभी वस्तुओं और सब कारखानों के अधिकारी हैं।'' इसी समय किसी एक पंजाबी के, गोरे सरदार के कानों में कुछ कहते ही उसकी लाल-लाल आँखें ज्वलन्त अंगारे की तरह उग्र हो उठीं। उसने गरजते हुए कहा- ''स्टॉप! यह नहीं चलेगा। इससे शांति भंग होगी।''

अपूर्व चौंक उठा। रामदास के कुर्ते को पकड़कर वह खींचातानी करने लगा- ''ठहरो रामदास, ठहरो! इस निःसहाय मित्रहीन विदेश में तुम्हारी स्त्री है, तुम्हारी एक छोटी लड़की है।''

रामदास ने कुछ भी नहीं सुना। चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगा- ''ये लोग अन्यायकारी हैं। ये लोग डरपोक हैं। सत्य को ये किसी हालत में तुम लोगों को सुनने नहीं देना चाहते! लेकिन ये लोग नहीं जानते कि सत्य का गला दबाकर उसकी हत्या नहीं की जा सकती। वह चिरंजीवी है!'' गोरे ने इसका अर्थ नहीं समझा। लेकिन एकाएक सैकड़ों लोगों के सर्वांग से छिटक कर जैसे तीक्ष्ण उत्तेजना की भभक उसके मुँह पर लगी। वह हुँकार करके बोल उठा - ''यह नहीं चलेगा। यह राजद्रोह है।''

पलक मारते ही पांच-छः घुड़सवार घोड़ों से कूदकर रामदास के दोनों हाथों को पकड़कर जोर से खींचते हुए नीचे ले गए। उसका दीर्घ शरीर घोड़ों और घुड़सवारों के बीच में देखते-देखते लुप्त हो गया, लेकिन केवल शरीर । उसका तीक्ष्ण तीव्र कण्ठ- स्वर किसी तरह भी बन्द नहीं हुआ, इस विक्षुब्ध - विपुल जनता के एक छोर से दूसरे छोर तक ध्वनित होने लगा - ''भाइयो! शायद अब कभी मुझसे और आप लोगों से भेंट न होगी। लेकिन मनुष्य होकर जन्म लेने की मर्यादा यदि अपने मालिकों के पैरों के नीचे दलित न कर चुके होंगे तो फिर इतने बड़े उत्पीड़न, इतने बड़े अपमान को तुम लोग कभी बर्दाश्त मत करना।''

लेकिन उसकी बातें समाप्त होते न होते ही, मानो दक्ष यज्ञ शुरू हो गया। घोड़े दौड़ने लगे, चाबुक चलने लगे, और अपमानित-अभिभूत-अस्त-व्यस्त श्रमिकों का दल जान बचाकर इस तरह से भाग खड़ा हुआ कि कौन किसके ऊपर गिरा और किसके पैर के नीचे लोट गया, इसका ठिकाना न रहा।

कुछ चोट खाए हुए घायल व्यक्तियों को छोड़कर सारा मैदान जनहीन होने में देर न लगी । किसी तरह लंगडाते हुए जो लोग उस समय भी इधर-उधर भागे जा रहे थे, उनकी ओर एकटक देखती हुई सुमित्रा स्तब्ध हो रही और उनसे कुछ ही दूरी पर अपूर्व बैठा रहा । और एक महिला चुपचाप सिर झुकाए उसी प्रकार विमूढ की तरह स्थिर बैठी रही । *(क्रमशः)*

दूध और खून

गुरु नानक लोगों को उपदेश देते हुए एक गाँव में पहुँचे। वहाँ वे एक गरीब बढ़ई के घर पर ठहरे। उसका नाम 'लालो' था । उसी गाँव में एक धनाढ्य व्यक्ति रहता था, जिसका नाम 'मलिक भागो' था। उसने एक दिन गाँव के सारे लोगों को भोजन के लिए निमंत्रित किया। सारे लोग खा चुकने पर उसने नौकरों से पूछा कि कहीं कोई आदमी गाँव में उसके यहाँ बिना खाये तो नहीं है? इस पर नौकरों ने बताया कि लालो के घर में एक साधु आया है जो भोजन से वंचित रहा है। भागो ने गुरु नानक को बुलाया तथा उनसे पूछा, ''आप मेरे यहाँ भोजन करने क्यों नहीं आये?'' गुरु नानक ने कहा, ''अब आया हूँ।'' नौकरों ने उनके सामने तरह-तरह के पक्वान लाकर रखे। तब गुरु नानक ने लालो से भी घर से भोजन लाने को कहा।

वह घर जाकर रोटियाँ ले आया। गुरु नानक ने भागो की रोटी लेकर उसे दबाया, तब उसमें से खून निकलने लगा । फिर लालो की रोटी को दबाया, तो उसमें से दूध निकलने लगा। यह देख वहाँ उपस्थित लोग चकित हो गये। तब नानकजी ने बताया ''भागो ने गरीबों को लूटा है, इसलिए इसकी रोटी में गरीबों का खून है, जबकि लालो की कमाई ईमानदारी की है, अतः उसकी रोटी से दूध निकला।''

यह सुन भागो नानक के चरणों में गिर पड़ा और उनसे क्षमा माँगकर कहने लगा कि आगे से वह मेहनत की कमाई खाएगा तथा दूसरों को कष्ट न देगा। ■

पैरों में असह्य जलन

मेरे पैर में ऐसी भयानक जलन थी कि मैं तीन दिन और रात सो नहीं सका। सूजन भी थी । मैंने बहुत दवाई लगाई मगर फर्क नहीं पड़ा था। तब मैंने निम्न प्रयोग किया।

१०० ग्राम तुलसी की पत्तियां / १०० ग्राम नीम की पत्तियां /१०० ग्राम नमक

तीनों को एक गंज (बर्तन) में उबालकर थोड़ा ठंडा होने पर उसमें दोनों पैर डुबा दिए। बस, एक ही वार के प्रयोग से पैर में भयंकर जलन और सूजन मिट गई। अगर पैर में जलन और सूजन दोनों हो तो यह दवा करने पर जल्दी आराम होगा। जलन को फौरन मिटा देने में यह दवा रामबाण सिद्ध हुई है। ■

रहिमन बहु भेषज करत , व्याधि न छाँड़त साथ । खग, मृग बसत अरोग बन, हरि अनाथ के नाथ ।।

कैंसर और इसका कारण

क्या आपको ऐसा नहीं लगता है कि इन दिनों हम जो भी करते हैं या खाते हैं, उसे कैंसर का कारण मान लेते हैं? सूर्य के प्रकाश में अधिक देर तक रहने से त्वचा कैंसर का ख़तरा बढ़ जाता है। एस्बेस्टस का काम करने वाले मज़दूरों में फेफड़े के एक अजीब प्रकार के कैंसर का ख़तरा बढ़ जाता है, जिसे मीज़ोथीलिओमा कहते हैं। धूम्रपान और द्वितीयक धुआँ फेफड़ों के कैंसर का मुख्य कारण है और कैंसर से होने वाली मौतों का सबसे बड़ा कारण है। विकिरणें, चारकोल, खाने में वसा की अत्यधिक मात्रा, सेक्रीन तथा हर्बिसाइट और पेस्टीसाइट में पाए जाने वाले रसायनों या ऐसी चीजें जिनसे हममें कैंसर होने का ख़तरा बढ़ जाता है, इसको चिकित्सा साहित्य की भाषा में कार्सिनोजन कहा जाता है।

जब से यह रिपोर्ट आई है कि चिमनी से निकलने वाले धुएँ से अंडकोष के कैंसर का ख़तरा बढ़ जाता है, हम अपने पर्यावरण से और अधिक डरने लगे हैं। जैसा मैंने पहले भी कहा है कि हमारा शरीर पिछली पीढ़ियों की तुलना में कहीं अधिक रसायनों का सामना कर रहा है। इन सभी कार्सिनोजन में एक सामान्य प्रभाव क्या होता है? आप अनुमान लगा सकते हैं। ये सभी ऑक्सीडेटिव तनाव को बढ़ाते हैं। यहीं कैंसर से लड़ने की नई रणनीति की कुंजी है। ■

अवयव दान, नेत्रदान और त्वचादान

जीवन के बाद भी एक सत्कार्य अर्थात नेत्रदान और अवयव दान। आज के वैज्ञानिक युग में मृत्यु के पश्चात शरीर के कुछ विभिन्न अंगों से यदि किसी अन्य व्यक्ति को जीवनदान देना संभव हो तो उसे जलाना, नष्ट नहीं करना चाहिए, उसे दान करना चाहिए। मृत्यु के बाद भी सत्कार्य संभव है। अतः जीवन पश्चात का अवयव दान एक उत्तम दान हो सकता है।

कहानी

खजाने के वचनों में दंभ

एक राजा और रानी थे। उनकी पुत्री जब बड़ी हुई तो रानी को उसके विवाह की चिंता होने लगी। रानी को उत्तम घर और श्रेष्ठ वर की तलाश थी।

उनके महल में एक जमादारिन आया करती थी। एक दिन रानी को उदास देखकर उसने कारण पूछा तो रानी ने कहा - ''बेटी बड़ी हो गई है, उसके ब्याह की चिंता रात-दिन खाए जा रही है।''

जमादारिन तपाक से बोली- ''रानीजी ! आप नाहक परेशान हैं, मेरा लड़का है न । उससे राजकुमारी का ब्याह कर दीजिए।''

रानी आपे से बाहर होकर बोली- ''तू अपनी औकात भूल गई है क्या? कहाँ राजकुमारी और कहाँ तेरा लड़का।''

रानी ने उस जमादारिन को महल से बाहर निकलवा दिया। रात को राजा महल में आए तो रानी ने सारी बात उन्हें कह सुनाई।

राजा ने रानी से पूछा- ''वह कहाँ खड़ी होकर यह बात कर रहीं थी ?''

रानी ने इशारा करके वह जगह बता दी।

राजा ने कहा - ''रानी ! जमादारिन ऐसा नहीं बोल सकती। जरूर किसी और ने ऐसा बोला होगा।''

रानी ने खीझकर कहा - ''हम दो को छोड़कर और कोई वहां था ही नहीं।''

दूसरे दिन राजा ने उस जगह को खुदवाया, जहाँ खड़े होकर जमादारिन ने ऐसा कहा था। देखा तो नीचे अशर्फियों से भरे कलश गड़े हुए थे।

राजा ने उन्हें निकलवा कर जगह को ठीक कर दिया और रानी से कहा- ''अब तुम जमादारिन को इसी स्थान पर खड़ा करके उससे बात करना।''

रानी ने जमादारिन को बुलवाया और अपनी तरफ से बेटी के ब्याह की चर्चा छेड़ते हुए कहा - ''अरी! तेरे लड़के का क्या हुआ? तू भी तो सोच सकती है।''

जमादारिन ने गिड़गिड़ाकर कहा - ''कहाँ आप और कहाँ हम ।'' अब रानी की समझ में आया कि उस दिन जमादारिन नहीं, अशर्फियों का खजाना बोल रहा था । ■

गत महीने की संस्था की गतिविधियाँ

- अन्नक्षेत्र में भोजन के ३७ तथा हल्दी दूध के १६ कार्ड बनाए।
- १६३ कैंसरग्रस्त परिवारों को अनाज वितरित किया गया ।
- प्रतिदिन ७२४ मरीज़ों को फल दिया गया ।
- ११ मरीज़ों को रक्त के लिए सहायता प्रदान की गई।
- १६ मरीज़ों के रहने की व्यवस्था की गई।
- १३ मरीज़ों को अलग-अलग संस्था में आवेदन पत्र देकर उपचार पत्र बनाकर दिए गए, जिससे उन्हें अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।
- कैंसर पीड़ित मरीजों को ८,०६,५२०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- अन्य मरीजों को ३,४६,८३०/- रु. की दवाएँ दी गई ।
- ३७ घायल पशु-पक्षीओं को ईलाज के लिए अस्पताल पहुँचाया गया ।
- पशु-पक्षीओं के ईलाज के लिए रु. ४,६४,३००/- की दवाएँ दी गई ।
- अपंग व्यक्तिओं को १ वोकर, ३ वॉकिंग स्टीक, ४ कमोड चेअर, ५ व्हिलचेअर, ७ पलंग, ६ ऑक्सिजन मशीन और ३ ऑक्सिजन सिलेण्डर दिए गये।
- ८ कैंसरग्रस्त मरीज़ों की फाईल बनाई गई ।
- ६७ मरीज़ों ने निःशुल्क ऐम्ब्युलेंस् सेवा का लाभ लिया ।
- ६ कर्करोग पीड़ितों को कोलोस्टॉमी बेग कम कींमत पर दी गई ।
- २ लावारिस कैन्सरग्रस्त मरीज का अंतिम संस्कार किया गया ।
- रास्ते में बेहाल स्थिति में पड़े रहनेवाले ३ व्यक्तिओं को वृद्धाश्रम पहुँचाया गया।

देहदान प्रतिज्ञा पत्र

जीवन ज्योत कैंसर रिलीफ एन्ड केअर ट्रस्ट की विभिन्न प्रवृत्तियों में से एक प्रवृत्ति 'देहदान' की है, किसी भी भाई-बहन की इच्छा वसियत (विल) (मरने से पहले के घोषणापत्र) बनाने की हो, तो स्वतः के हाथ से एक प्रतिज्ञापत्र भरना होगा। स्वतः के शरीर या शरीर के किसी भी भाग को आधुनिक प्रगति के लिए या मेडिकल साइन्स के विद्यार्थियों के काम में आए इस हेतु से प्रतिज्ञापत्र बनाए गये हैं। प्रतिज्ञापत्र जीवन ज्योत संस्था के कार्यालय से आपको मिलेंगे या कुरियर द्वारा आपको पहुंचा दिये जाएंगे।

रहिमन रिस को छाँड़ि के, करौ गरीबी भेस । मीठो बोलो, नै चलो, सबै तुम्हारी देस ।।

कहानी

मूरखराज

(गतांक से आगे)

पूले रे, सुन और मान
मेरी तुझको यही जुबान ।
जहां-जहां हो तेरी सींक
वहीं हो उठे एक जवान ।''

प्यारे ने पूला लिया, धरती पर जमाया और चर का बताया हुआ मंतर पढ़ा। पूला देखते-देखते नष्ट हो गया और उसकी एक-एक बाल की जगह वर्दी से लैस सिपाही खड़े दिखाई दिये।

एक के पास ढोल था, दूसरे के पास तुरही ऐसे पूरे बैंड का सरअंजाम था। यह देखकर प्यारे खुश हुआ और खूब हँसा, बोला- ''यह तो बढ़िया बात रही। देखकर लड़कियां कैसी खुश होंगी।''

चर बोला- ''अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।''

प्यारे ने कहा- ''नहीं जी, सिपाही मैं खाली पुआल के बनाऊँगा। कोई मैं भला उनके लिए अनाज वाली बात खराब करने वाला थोड़े ही हूँ । इसलिए बताओ कि सिपाही फिर पहले पूले की हालत में कैसे आ सकते हैं? सोचो, मुझे उनमें से अनाज निकालना हैं कि नहीं।''

चर ने बताया- ''तो यह मंतर पढ़िये-
सुनता है तू ओरे जवान,
मेरी है बस एक जुबान
सींक सींक था जैसा पहले,
वैसा ही तू हो जा मान।''

प्यारे ने जैसे ही इस मंतर को पढ़ा, कि सारे सिपाही अंतर्ध्यान हो गए और जैसा-का-तैसा पूला हो गया।

चर फिर हाथ जोड़कर कहने लगा कि अब मुझे जाने दीजिए।

सुनकर जेली की नोंक से उसे छुड़ाया और कहा- "अच्छी बात है, जाओ भगवान तुम्हारा भला करे।"

भगवान का नाम मुँह से निकलना था कि कंकड़ पानी में गिरे, वैसे वह धरती पर छूटकर गायब हो गया और वहां निशानी में एक सूराख रह गया। प्यारे उसे देखता ही रह गया।

प्यारे लौटकर घर पहुँचा । यहां देखा कि उसका मंझला भाई धनवीर आया हुआ है । उसके साथ उसकी पत्नी भी थी। उस समय वह दोनों पति-पत्नी भोजन करने की तैयारी में थे।

धनवीर अपना कर्जा चुका नहीं सकता था । इसलिए साहूकारों से बचकर यहां भाग आया था और आकर बाप के घर में शरण ली थी।

प्यारे को देखकर धनवीर ने कहा- "सुनो भाई मूरख, जब तक मेरा दूसरा काम लगे, तब तक मैं और मेरी बीवी यहीं हैं और हमको कोई कष्ट न हो, यह तुम्हारा ही काम है।"

प्यारे प्रसन्नता के साथ बोला- "अच्छी बात है, जब तक आप चाहें, तब तक आप लोग यहां रहिये।"

फिर प्यारे ने दोहर रखा और हाथ-मुँह धोया। उसके बाद वह भोजन की थाली पर आकर बैठ गया।

लेकिन धनवीर की पत्नी ने कहा- "मैं उस गंवार के साथ खाना नहीं खा सकती। सारे बदन में तो इसके पसीने की बदबू आ रही है । मुझसे तो एक पल भी यहां नहीं ठहरा जाता।"

इस बात पर धनवीर ने प्यारे से कहा- "प्यारे तुम्हारे बदन से बदबू आ रही है, जाओ बाहर जाकर खा लो।"

प्यारे बोला- "अच्छी बात है। मुझे तो वैसे ही इस वक्त बाहर जाना था। मैं बाहर ही खाना खा लेता हूँ।"

यह कहकर मूरख ओसारे में चला गया।

धनवीर का घर भी खाली हो गया था । इसलिए चरों द्वारा निश्चित की हुई बात के मुताबिक मूरख को बस में लाने में अपने साथियों की मदद करने वह भी उस रात आ पहुँचा।

उसने खेत में आकर घूम-फिरकर बहुत देखा, वहां कोई भी नहीं था। मिला तो वहां सुराख मिला। वह फिर चरी की धरती में आया। वहां दलदली धरती में देखा तो उसके साथी की पूंछ कटी पड़ी है और जई वाले खेत में दूसरा एक सूराख और भी उसे दिखाई दिया।

उसने सोचा- मेरे साथियों पर कोई भारी मुसीबत आ पड़ी है। इसलिए उनका काम अब मुझे संभालना चाहिए और उस मूरखराज को काबू में लाना चाहिए, वरना सरदार नाराज हो जाएगा।

यह सोचकर वह चर मूरख प्यारे की तलाश में गया । प्यारे ने अनाज खलिहान में रख दिया था, और अब जंगल के पेड़ गिरा रहा था। बात यह थी कि दोनों भाई बोले- "यहां तो घर में जगह कम है और गिचपिच मालूम होती है। इससे जाओ प्यारे पेड़ गिराकर कुछ जगह साफ कर डालो और वहां हमारे लिए नए मकान बनवाकर खड़े करो।"

चर दौड़कर जंगल में जा पहुँचा।

वहां दरख्तों की टहनियों में छिपकर प्यारे के काम में अड़चन डालने लगा। प्यारे ने उस दरख्त को जड़ से काट लिया था और इस प्रकार था कि वह कुल साफ धरती पर आ जाए, लेकिन देखता क्या है कि दरख्त गिरा तो नहीं, बल्कि दूसरे पेड़ की शाखों से उलझकर रह गया।

प्यारे ने इस पर बल्ली की मदद से उसे जड़ से कुछ सरकाया, फिर कहीं पेड़ धरती पर आकर गिरा और पेड़ों के गिराने में भी ऐसे ही बीती । बहुत कोशिश करता पर दरख्त सीधा साफ धरती पर नहीं गिरता । उसने फिर तीसरा पेड़ काटा तो फिर वही बात हुई।

उसको पूरी ही उम्मीद थी कि छोटे-मोटे पचास पेड़ तो आज काट ही गिराऊँगा, मगर दस- एक भी नहीं गिराये थे। शाम होने वाली थी, और वह थककर चूर

हो गया था। सर्दी के कारण बदन से निकली पसीने की भाप जंगल में धुएं के मानिंद फैली दिखाई देती थी, पर उस इंसान ने भी काम नहीं छोड़ा। वह काम में लगा ही रहा और एक दरख्त उसने काट डाला।

लेकिन अब उसकी कमर इतनी दुःखने लगी थी कि खड़े रहना मुश्किल हो रहा था। आखिर कुल्हाड़ी पेड़ में लगी छोड़ धरती पर बैठकर वह सस्ताने लगा, उसकी सांस फूल रही थी।

चर यह देख रहा था कि प्यारे काम से थका हुआ है। यह देखकर वह बड़ा खुश हो रहा था।

उसने सोचा- आखिर यह अब थका तो...। अब आगे भला क्या काम करेगा इसलिए मैं भी आराम कर लूँ।''

यह सोचकर चर पेड़ की शाखा पर फेलकर आराम से सो गया। चैन की सांस ली, मगर थोड़ी देर में प्यारे तो उठकर खड़ा हो गया, और कुल्हाड़ी खींचकर सिर के उपर से घुमाकर परली तरफ जोर से जो मारी कि एकदम पेड़ ढहता हुआ गिरा। चर को यह उम्मीद नहीं थी । उसे संभलने का समय नहीं मिल पाया और पेड़ गिरा तो उसके पंजे उसमें फंसे रह गए। प्यारे एक-एक करके पेड़ की टहनियां काटने लगा।

इतने में क्या देखता है कि दरख्त से चिपटे यह हजरत जीते-जागते वहां लटके हुए हैं। प्यारे को यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ? वह बोला- ''क्योंजी, तुम फिर यहां आ पहुँचे ?

चर बोला- ''जी, मैं वह नहीं, दूसरा हूँ । अब तक तुम्हारे धनवीर के साथ था, अब तुम्हारे पास आया हूँ।''

''जो भी हो । चलो, तुम्हें मैं तुम्हारे कार्यों का फल तो दे दूँ, ताकि यहां आने का तुम्हें सबक मिल जाए।''

इतना कहकर कुल्हाड़ी घुमा, वह उसकी मूठ उसके सिर पर दे मारने वाला ही था कि वह चर दया के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

(क्रमशः) ■

चिकित्सा

मेथी चिकित्सा

मेथी के औषधिय गुण–

दाणा मेथी हमारे रसोईघरों में दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तु है, जो अनेक औषधिय गुणों से भरपूर होती है। प्राचीन काल से ही इसका प्रयोग खाद्य और औषधि के रूप में हमारे घरों में होता आ रहा है। आयुर्वेद के ग्रन्थ भावप्रकाश में कहा गया है कि मेथी वात को शान्त करती है, कफ और ज्वर का नाश करती है। राज निघन्दु में मेथी को पित्त नाशक, भूख बढ़ाने वाली, रक्त शोधक, कफ और वात का शमन करने वाली बतलाया गया है। मेथी में प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेटस, खनिज, विटामिन, केल्शियम, फॉसफोरस, लोह तत्त्व, केरोटीन, थायमिन, रिवाफलेबिन, विटामिन सी आदि प्रचुर मात्रा में होते हैं। लोह तत्त्व की अधिकता के कारण मेथी रक्त की कमी वालों के लिये विशेष लाभप्रद होती है। मेथी दानों से शरीर की आन्तरिक सफाई होती है। मेथी का उबला पानी बुखार को कम करने में बहुत ही लाभप्रद होता है।

मेथी सेवन से पाचन तंत्र सुधरता है। पेट में कर्मियों की उत्पत्ति नहीं होती । आंतों में भोजन का पाचन बराबर होता है। बड़ी आंत में, मल में कुछ गाढ़ापन आता है और मल आसानी से बड़ी आंत में गमन करने लगता हैं। मेथी खाने से भूख अच्छी लगती है। मेथी सेवन से गंध और स्वाद इन्द्रियाँ अधिक संवेदनशील होती हैं। यह शरीर का आन्तरिक शोधन करती है। शलेष्मा को घोलती है तथा पेट और आंतों की सूजन ठीक करने में सहायक होती है। मेथी सेवन से मुँह की दुर्गन्ध दूर होती है। कफ, खांसी, इनफ्लेन्जा, निमोनिया, दमा आदिश्वसन संबंधी रोगों में लाभ होता है। गले की खराश में मेथी दाने के पानी से गरारे करने से बहुत लाभ होता है।

मेथी सेवन की विभिन्न विधियाँ–

अलग-अलग रोगों के उपचार हेतु मेथी का प्रयोग अनेक प्रकार से किया जाता है। जैसे- मेथी दाणा भिगोकर उसका पानी पीना, उसे अंकुरित कर खाना, उबालकर उसका पानी पीना, सब्जी बनाकर खाना, विभिन्न अचारों, सब्जियों अथवा अन्य खाद्य पदार्थों के साथ पकाकर सेवन करना, मेथी दानों को चूसना, चबाना अथवा

पानी के साथ निगलना, मेथी की चाय अथवा काढ़ा बनाकर पीना, उसका पाउडर बना पानी के साथ लेना, अथवा लेप करना, मेथी की पुड़िये बनाकर खाना अथवा पकवान बनाकर उपयोग करना इत्यादि, कई तरीकों से मेथी का प्रयोग हमारे घरों में होता रहता है।

स्वयं करें मेथी स्पन्दन का अनुभव–

कागज की चिपकाने वाली टेप पर मेथी दानों को चिपका कर हथेली के अंगूठे के नाखून वाले ऊपरी पोरवे में उस टेप को लगा दें जिससे अंगूठे को मेथी का स्पर्श होता रहे। कुछ ही क्षणों में हमें उस स्थान पर स्पंदन की अनुभूति होनी प्रारम्भ हो जाती है। इससे प्रमाणित होता है कि मेथी का उसके गुणों के अनुरूप बाह्य उपयोग भी लाभप्रद हो सकता है।

मेथी स्पर्श चिकित्सा का सिद्धान्त–

शरीर में अधिकांश दर्द और अंगों की कमजोरी का कारण आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार प्रायः वात और कफ संबंधी विकार होते हैं। मेथी वात और कफ का शमन करती है। अतः जिस स्थान पर मेथी का स्पर्श किया जाता है, वहाँ वात और कफ विरोधी कोशिकाओं का सृजन होने लगता हैं, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने लगती है। दर्द वाले अथवा कमजोर भाग में विजातीय तत्त्वों की अधिकता के कारण शरीर के उस भाग का आभा मंडल विकृत हो जाता है। मेथी अपने गुणों वाली तरंगें शरीर के उस भाग के माध्यम से अन्दर में भेजती है। जिसके कारण शरीर में उपस्थित विजातीय तत्त्व अपना स्थान छोड़ने लगते हैं, प्राण ऊर्जा का प्रवाह संतुलित होने लगता है। फलतः रोगी स्वस्थ होने लगता है।

मेथी रक्त शोधक है, रोगग्रस्त भाग का रक्त प्रायः पूर्ण शुद्ध नहीं होता। जिस प्रकार सोडा कपड़े की गंदगी अलग कर देता है, मेथी की तरंगे रोग ग्रस्त अथवा कमजोर भाग में शुद्ध रक्त का संचार करने में सहयोग करती है जिससे उपचार अत्यधिक प्रभावशाली हो जाता है।

मेथी का स्पर्श क्यों प्रभावशाली ?

मेथी के प्रत्येक दाने में हजारों दाने उत्पन्न करने की क्षमता होती है। अतः उसके सम्पर्क से मृत प्रायः कोशिकाएँ पुनः सक्रिय होने लगती है। मेथी के औषधिय गुणों

की तरंगें कमजोर अंगों को शक्तिशाली बनाने, शरीर के दर्द वाले भाग की वेदना कम करने, जलन वाले भाग की जलन दूर करने में चमत्कारी प्रभावों वाली सिद्ध हो रही है।

मेथी जो कार्य पेट में जाकर करती है, उससे अधिक एवं शीघ्र लाभ उसके बाह्य प्रयोग से संभव होता है, क्योंकि उससे रोगग्रस्त भाग का मेथी की तरंगों से सीधा सम्पर्क होता है। किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव की संभावना प्रायः नहीं रहती। रोगग्रस्त भाग को मेथी के औषधिय गुणों का पूर्ण लाभ मिलता है जबकि मेथी सेवन से रोगग्रस्त भाग तक उसका आशिंक लाभ ही मिलता है। परिणाम स्वरूप मेथी का बाह्य स्पर्श विभिन्न असाध्य स्थानीय रोगों का सहज, सरल, स्वावलंबी प्रभावशाली उपचार के रूप में विकसित हो रहा है। अनेकों रोगों के उपचार में यांत्रिक एवं रसायनिक परीक्षणों एवं अनुभवी चिकित्सकों के परामर्श की भी आवश्यकता नहीं रहती। मात्र रोगग्रस्त भाग अथवा कमजोर अंगका मेथी से स्पर्श रखना पड़ता है।

मेथी स्पर्श द्वारा विविध उपचार–

मेथी दानों को शरीर के दर्द वाले भाग पर लगाने से दर्द में तुरन्त राहत मिलती है। शरीर के कमजोर अंग पर लगाने से वह अंग पुनः सक्रिय और ताकतवर होने लगता है। जलन, सूजन, दाद, खुजली वाले स्थान पर मेथी लगाने से तुरन्त लाभ मिलता है। मेथी दानों को चूसते रहने से दांतों का दर्द ठीक होता है और गले संबंधित रोगों में आराम मिलता है। अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ एवं ऊर्जा चक्रों पर मेथी दाना लगाने से उसके आसपास जमे विकार दूर होने से उनकी सक्रियता बढ़ जाती है। हथेली और पगथली में मेथी दानों के मसाज से सारे शरीर से संबंधित एक्यूप्रेशर प्रतिवेदन बिन्दू सक्रिय होने लगते हैं। एक्यूप्रेशर के दर्दस्थ प्रतिवेदन बिन्दुओं पर मेथी स्पर्श से वहाँ जमें विजातीय तत्त्व दूर होने लगते हैं और एक्यूप्रेशर चिकित्सा बिना दर्द वाली स्वावलंबी प्रभावशाली उपचार पद्धति से हो जाता है।

१. अंगूठे के ऊपर वाले पोरवे पर मेथी लगाने से चक्कर एवं सिर दर्द संबंधी विभिन्न रोगों में तुरन्त आराम मिलता हैं। रक्तचाप बराबर होने लगता है। तनाव, भय, अधीरता, क्रोध कम होने लगता है।

२ रात्रि में सोते समय हाथ के अंगूठों के पहले पोरवे पर मेथी लगाने से अनिद्रा के रोग से छुटकारा मिलता है।

३. मेथी का हल्का सा मसाज सीने पर करने से फेंफड़े मजबूत होते हैं। कफ, खांसी, दमा में आराम मिलता है।

४. हृदय रोगियों के हृदय वाले स्थान पर मेथी दाना लगाने से हृदय शूल और हृदय संबंधी अन्य विकार शीघ्र दूर होने लगते हैं।

५. स्पलीन पर मेथी स्पर्श करने से मधुमेह ठीक होता है। शरीर में लासिका तंत्र बराबर कार्य करने लगता हैं जिससे सूजन नहीं आती। आमाशय पर लगाने से पाचन अच्छा होता है। लीवर, पित्ताशय, गुर्दा, आंतों पर मेथी लगाने से संबंधित अंगों से विजातीय तत्व दूर होने लगते हैं और वे सारे अंग अपनी क्षमतानुसार कार्य करने लगते हैं।

शरीर के जिस स्थान पर बाल हो और टेप से मेथी दानों का स्पर्श संभव न हो वहाँ मेथी का लेप कर उपचार किया जा सकता है। आग से जलने पर दानेदार मेथी को पानी में पीस कर लेप करने से जलन दूर होती है, फफोले नहीं पड़ते। मेथी का सिर पर लेप करने से बाल नहीं गिरते तथा गंजों के बाल आने लगते हैं। बाल अपने प्राकृतिक रंग में मुलायम बने रहते हैं। बालों की लम्बाई बढ़ती है। ताजा पत्तियों का पेस्ट रोज नहाने से पूर्व चेहरे पर लेप करने से चेहरे का रुखापन, झुरियाँ, गर्मी से होने वाले फोड़े फुन्सियाँ आदि ठीक होते हैं।

पगथली के अंगूठों और अंगुलियों में मेथी लगाने से नाड़ी संस्थान संबंधी रोगों में शीघ्र राहत मिलती है।

मेथी कैसे और कितनी देर लगायें–

बाजार में अलग-अलग माप की चिपकाने वाली कागज की टेप मिलती है। आवश्यकतानुसार माप की टेप पर मेथीदाना को चिपका दें। चारों तरफ थोड़ा स्थान खाली छोड़ दें ताकि टेप त्वचा पर आसानी से चिपक सकें। मेथी दानों का स्पर्श तब तक शरीर पर रहने दें, जब तक उस स्थान पर किसी प्रकार की प्रतिकूलता अथवा सिर में भारीपन अनुभव न हों। मेथी अपना प्रभाव लगाने के तुरन्त बाद अनुभव कराने लग जाती है। मात्र तीन दिन के नियमित प्रयोग से उसके चमत्कारी प्रभावों का अनुभव होना प्रारम्भ होने लगता है।

उपसंहार– सारांश यही है कि मेथी स्पर्श चिकित्सा सहज, सरल, सस्ती, प्रभावशाली, दुष्प्रभावों से रहित, वैज्ञानिक, पूर्ण स्वावलंबी एवं अहिंसक होती है, जिसका शरीर के रोगग्रस्त भाग पर शीघ्र प्रभाव पड़ता है। मेथी दर्द नाशक एवं रक्तशोधक होती है। विजातीय तत्त्वों को दूर कर शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। जिससे निष्क्रिय अंग सक्रिय एवं रोगग्रस्त भाग रोग मुक्त होने लगते हैं। अतः भविष्य में दवाओं के बढ़ते दुष्प्रभावों का प्रभावशाली विकल्प मेथी स्पर्श चिकित्सा के समान दवाओं के शरीर पर स्पर्श से हो तो आश्चर्य नहीं ? ■

काव्य

कभी-कभी अचानक ही
मेरा खून इतना खौल उठता है,
कि मैं जो हूँ
वह नहीं रह पाता ।
मेरे सामने जो कुछ घटता है,
उसे सह नहीं पाता।
जी चाहता है-
उफनते दूध जैसा,
दहकती आग में कूद पडूँ ।
लेकिन मेरे मन का यह उफान
ज्यादा देर तक नहीं रह पाता ।
मेरी बीबी-
मुझे समझा कर कहती है।
इस दुनिया में जीना है तो
जीने की कला सीखो।
अपने ही बच्चों के खिलाफ बोल कर
क्या पाओगे ? अपना ही जी घुटाओगे।
किसी दिन कहीं के भी न रह जाओगे,
और किसी के भी न बन पाओगे ।
आज के जमाने में, जो सही बोलता है,
वह विद्रोही कहलाता है।
सही तो वह है,
जो उससे मेल मिलाता है।
गलत हो या सही,
उनकी हाँ में हाँ मिलाता है।
और अब जब ज्यादा जीना ही नहीं,
तो क्यों अपनी चलाओगे ?
■

ताल से ताल मिला

रागिनी की आंटी जब उसका हालचाल पूछने अस्पताल पहुँचीं तो उसकी मम्मी उन्हें देखते ही फूट-फूटकर रो पड़ीं, रोते-रोते ही उन्होंने बताया कि एक महीना पहले स्कूल में खेलते हुए अचानक इसके सिर में चोट आ गई थी। उसके बाद आजतक मेरी बेटी ने आँख खोलकर नहीं देखा। अब तो धीरे-धीरे डॉक्टर भी उम्मीद छोड़ते जा रहे हैं। रागिनी की आंटी ने कहा कि मैं तो उसके लिये एक सुंदर मधुर संगीत वाला खिलौना लेकर आई थी। मुझे माफ करना, लेकिन मैं सच में यह नहीं जानती थी कि रागिनी को इतनी गंभीर चोट आई है। इसी बातचीत के दौरान न जाने कैसे उस खिलौने का कोई बटन दब गया और उसमें से बहुत ही प्यारे गाने की धुन बज़ने लगी, ''मेरे घर आई नन्हीं परी ।'' रागिनी की मम्मी ने उस रिश्तेदार को बताया कि जिस दिन से यह पैदा हुई है, उस दिन से इसके पापा ने भी अपने मोबाइल फोन पर यही धुन लगाई हुई है। इसी दौरान रागिनी की मम्मी ने देखा कि बिटिया की आँखों में कुछ हलचल हुई है। उन्होंने झट से डॉक्टर को बुलाया तो उसने भी इस बात की पुष्टि कर दी।

डॉक्टर ने जब रागिनी की मम्मी से इस करिश्मे के बारे में पूछा तो उन्होंने

उस खिलौने और संगीत के बारे में सब कुछ बताया। इन लोगों ने यही प्रयोग फिर से किया। बार-बार लगातार प्रयास

करने से कुछ ही दिनों में रागिनी सामान्य होने लगी। जब रागिनी की मम्मी ने डॉक्टर से इस बारे में और जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि संगीत में इतनी ताकत होती है कि वह बिना कुछ कहे भी अपने जादू का असर दिखा सकता है। अच्छा संगीत सिर्फ बीमार और रोगियों पर ही नहीं, बल्कि स्वस्थ व्यक्तियों पर भी अच्छा प्रभाव डालता है। इससे पहले भी मैंने संगीत चिकित्सा से ब्लड प्रेशर, टेंशन- डिप्रेशन और कई अन्य बीमारियों के मरीजों को ठीक होते देखा है। संगीत सुनने से जहां हमें मानसिक सुख और शांति मिलती है, वहीं सकारात्मक एवं सृजनात्मक सोच पैदा करने में भी इसकी विशेष भूमिका रहती है। आपकी बिटिया को देखकर अब मैं पूर्ण विश्वास से कह सकता हूँ कि संगीत किसी तरह से भी संजीवनी बूटी से कम नहीं होता । संगीत की इस जादुई शक्ति में दीवाने - मस्ताने हुए जौली अंकल यही राग अलाप रहे हैं कि अब सोचना क्या, आओ मिलकर ताल से ताल मिलाएं। ■

जलाराम अन्नदानक्षेत्र

नाम	एरिया	रुपया
❖ रितेश उगमराज जैन के जन्मदिन के अवसर पर	शिवरी	२१,०००/-
❖ स्व. कान्याबाई जैन की पुण्यस्मृति नि. ह. उगमराज भागचंद जैन	शिवरी	१४,०००/-
❖ स्व. जीतेन्द्र मोतीराम गवई ह. सुप्रिया गवई	शिवरी	४,०००/-
❖ स्व. शीला शर्मा की पुण्यस्मृति नि. ह. प्रीथा प्रेशी शर्मा	खारघर	४,०००/-
❖ सुशीला गुप्ता	शिवरी	४,०००/-

व्यक्ति के गुणों

– क्रिशा शर्मा, विद्याविहार

रामरती की दो बहुए थी। बड़ी बहू का नाम रेखा था। जो देखने में काली थी। वह उसके बड़े बेटे मोहन की बीवी थी। उन दोनों की लव मैरिज थी। रामरती अपनी बड़ी बहू को उसके रंग के कारण बिलकुल भी पसंद नहीं करती थी। उसकी छोटी बहु का नाम कमला था। जो की उसके छोटे बेटे रवि की बीवी थी। रामरती छोटी बहु कमला को बहुत पसंद करती थी। क्योकि वह देखने में सुंदर थी और उसको रवि के लिए उसने पसंद किया था।

रेखा कुछ दिनों के लिए अपने मायके गयी हुई थी। रामरती अपने पति से रेखा की चुगली करती है की अगर मोहन ने मेरी बात मानी होती तो उसकी भी कमला जैसी सुन्दर बहु लेकर आती। रामरती का पति भी अपनी पत्नी को समझाता था की रंग रूप से कुछ नहीं होता व्यक्ति के गुण मायने रखते है।

लेकिन रामरती को कोई फर्क नहीं पड़ता था। एक दिन रामरती के छोटे बेटे और बहु ने गोवा जाने का प्लान बनाया। उनको दो दिन बाद गोवा जाना था। अगले दिन रामरती की कमर में बहुत दर्द होने लगा।

उसको डॉक्टर के पास जाना था तो उसने अपने छोटे बेटे रवि को कहा तो रवि ने बोला की आज हमें शॉपिंग करने के लिए मार्किट जाना है। आप बड़े भाई के साथ चले जाइये। शाम को जब वह घर लौटे तो रामरती की तबियत ज्यादा ख़राब थी और घर पर डॉक्टर आये हुए थे।

डॉक्टर ने रामरती को १ हफ्ते बेडरेस्ट की सलाह दी। रवि के पिता ने रवि को गोवा में बाद में जाने की सलाह दी। तब छोटी बहू कमला बोली की ''हमनें गोवा जाने का बहुत दिन से प्लान किया हुआ है। माँ जी तो रोज़ रोज़ बीमार होती है।'' यह कहकर चली गयी। मोहन बोला पिता जी कोई बात नहीं मै रेखा को कल सुबह ही बुला लूंगा। अगले दिन रवि और उसकी बीवी गोवा चले गए। रेखा को जैसे ही पता चला की माँ जी की तबियत ख़राब है वह तुरंत घर पर पहुंच गयी।

रामरती को इस सबसे पता चल चूका था की रंग रूप से ज्यादा व्यक्ति के गुण महत्त्व रखते है। वह जिस छोटी बहू को अच्छा समझती थी उसके गुणों ने उसको दुःख पहुंचाया जबकि जिस बड़ी बहु रेखा को वह पसंद नहीं करती थी उसके अच्छे गुणों से वह बहुत खुश थी। ■

कल्पना : आपके स्वचलित सफलता मेकेनिज्म को चालू करने वाली चाबी

किसी सफल कारोबार को चलाने के लिए इंसान के पास कल्पना होनी चाहिए। उसे चीज़ों को स्वप्न के रूप में देखना चाहिए, पूर्ण चीज़ के स्वप्न में ।

– चार्ल्स एम. श्वॉब, उद्योगपति

हममें से अधिकतर लोगों को इस बात का एहसास नहीं होता कि कल्पना हमारे जीवन में कितनी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मैंने इसे अपने पेशे में कई बार प्रमाणित होते देखा है । एक ख़ास तौर पर यादगार प्रसंग है, जिसमें एक मरीज़ के परिवार वालों ने उसे मेरे ऑफिस में आने के लिए विवश कर दिया था । उस व्यक्ति की उम्र ४० के लगभग थी, वह अविवाहित था, वह दिन में एक सामान्य नौकरी करता था और कार्य ख़त्म होने के बाद अपने अपार्टमेंट में अकेला रहता था, कभी कहीं नहीं जाता था, कभी कुछ नहीं करता था। वह ऐसी कई नौकरियाँ कर चुका था और कभी लंबे समय तक किसी जगह पर टिक नहीं पाता था।

उसकी समस्या यह थी कि उसकी नाक और कान जरा बड़े थे, जो सामान्य से थोड़ा अधिक बाहर निकले हुए थे । वह कल्पना करता था कि उसके 'अजीब' दिखने की वजह से उसके संपर्क में आने वाले लोग पीठ पीछे उस पर हँस रहे हैं और उसकी बुराई कर रहे हैं । उसकी कल्पना बढ़ते-बढ़ते इतनी प्रबल हो गई कि वह कारोबारी जगत में जाने और लोगों से संपर्क करने में सचमुच घबराने लगा। वह अपने खुद के घर में भी मुश्किल से 'सुरक्षित' महसूस करता था । वह बेचारा व्यक्ति यह कल्पना भी करता था कि उसके परिवार वालों को उस पर शर्म आती है, क्योंकि वह 'अजीब दिखता है' या 'दूसरे लोगों' जैसा नहीं दिखता।

वास्तव में, उसके चेहरे की कमियाँ गंभीर नहीं थीं । उसकी नाक क्लासिकल

रोमन जैसी थी और कान हालांकि थोड़े बड़े थे, लेकिन वैसे ही कान हज़ारों लोगों के थे, जो ज़्यादा ध्यान आकर्षित नहीं करते थे। हताशा में उसके परिवार वाले उसे मेरे पास ले आए और पूछा कि क्या मैं उसकी मदद कर सकता हूँ। मैंने देखा कि उसे सर्जरी की ज़रूरत नहीं है । उसे तो बस इस तथ्य को समझने की जरूरत थी कि उसकी कल्पना शक्ति ने उसकी आत्म छवि के साथ इतनी तबाही मचा दी है कि सच्चाई उसकी नज़रों से ओझल हो गई है। वह सचमुच बदसूरत नहीं था। उसके हुलिए के कारण लोग उसे अजीब नहीं समझते थे और न ही उसकी पीठ पीछे उस पर हँसते थे। दरअसल, उसकी कल्पना ही उसके दुख के लिए जिम्मेदार थी। उसकी कल्पना ने उसके भीतर एक स्वचलित, नकारात्मक असफलता मेकेनिज़्म बना दिया था और यह पूरी तेजी से कार्य कर रहा था। यही उसका दुर्भाग्य था। सौभाग्य से, उसके साथ कई सत्रों के बाद और उसके परिवार की मदद से उसे धीरे-धीरे यह एहसास हो गया कि उसकी कल्पना की शक्ति ही उसकी दुर्दशा के लिए ज़िम्मेदार है । इसके बाद वह एक सच्ची आत्म- छवि बनाने में कामयाब हुआ और उसने विनाशकारी कल्पना के बजाय सृजनात्मक कल्पना के इस्तेमाल से दोबारा आत्मविश्वास हासिल कर लिया।

आप कह सकते हैं कि उसे किसी वास्तविक छुरी से शारीरिक सर्जरी की नहीं, बल्कि भावनात्मक सर्जरी की जरूरत थी।

सर्जरी के कई वर्षों के अनुभव के बाद मैं इस कार्य में इतना चतुर हो गया कि सर्जरी की आवश्यकता को ही ख़त्म कर देता था!

यह हज़ारों लोगों के अनुभवों का एक उदाहरण है, जिसमें किसी न किसी तरह आप भी शामिल हो सकते हैं । हो सकता है कि आपको अपनी नाक, कान या किसी अन्य अंग पर शर्म न आती हो और हो सकता है कि आप एकांतप्रिय न हों। लेकिन कई लोग मानते हैं कि उनमें ऐसा कुछ है, जिसकी वजह से दूसरे उन्हें हीन मानते हैं, पीठ पीछे उनकी हँसी उड़ाते हैं, उन्हें अस्वीकार करते हैं। कोई ऐसी चीज़ जो उन्हें कई मायनों में प्रगति करने से रोकती है।

मैं एक बहुत ही चतुर, सफल और प्रचुर विचारों वाले व्यक्ति को जानता हूँ। वह विज्ञापन के क्षेत्र में है और उसके जीवन भर का पैटर्न यह रहा है कि जब उसकी आमदनी ज़्यादा हो जाती है, तो अचानक ऐसी परिस्थितियाँ बन जाती हैं, जो ''उसके पैरों तले के क़ालीन को खींच लेती हैं'', इसलिए उसे अपनी प्रतिष्ठा और संपत्ति को शुरू से, शून्य से दोबारा बनाना पड़ता है । एक महीने वह किसी महल में रह रहा था, दूसरे महीने मोटेल में । उसने मेरे ओर दूसरों के सामने स्वीकार किया है कि उसने अपना पूरा जीवन उस फ़ौलादी शिकंजे से बचने की कोशिश में बिताया है, जिसे वह 'पुरातन कचराघर' कहता है और गॉडफादर फ़िल्म में जैसा अल पचीनो कहता है जैसे ही वह बाहर निकलता है, उसे दोबारा खींच लिया जाता है। जाहिर है, उसे दोबारा खींचने वाली 'चीज़' का अस्तित्व भौतिक संसार में नहीं है; यह तो सिर्फ उसकी आत्म छवि में है। यह तो उसकी 'बदसूरत नाक और बड़े कान' के बारे में है । आपके मामले में यह क्या है?

विसंगति की बात यह है कि हालाँकि उसका पूरा कारोबार 'कल्पना जगत' पर आधारित है, लेकिन वह अब तक नहीं जान पाया है कि भावनात्मक सर्जरी में कल्पना का इस्तेमाल छुरी के रूप में कैसे करे, अपनी 'बड़ी नाक' की आत्म- छवि से बाहर कैसे निकले।

सृजनात्मक कल्पनाशीलता कोई ऐसी चीज़ नहीं है, जो सिर्फ कवियों, दार्शनिकों, आविष्कारकों आदि के लिए सुरक्षित हो । यह हमारे प्रत्येक कार्य में शामिल होती है। कल्पना लक्ष्य की तस्वीर तय करती है और हमारा स्वचलित मेकेनिज़्म इसी तस्वीर पर कार्य करता है। हम अगर किसी कार्य को करने में सफल या असफल हैं, तो यह इच्छाशक्ति के कारण नहीं होता, जैसा कि आम तौर पर माना जाता है; यह तो कल्पनाशक्ति के कारण होता है। ■

ज़िंदगी कोई समस्या नहीं है जिसे तुम्हें सुलझना है, ज़िंदगी एक एहसास है जिसे तुम्हें महसूस करना है।
भटकते हुए ही सही मगर मंज़िल तो मिल ही जाएगी, गुमराह तो वे लोग हैं, जो घर से निकले ही नहीं।
अपने वजूद पर इतना मत इतरा ए ज़िन्दगी! वो मौत है जो तुझे जीने की मोहलत देती जा रही है!
हज़ारों बार ली है तुमने तलाशी मेरे इस दिल की, बताओ कभी कुछ मिला है इसमें प्यार के सिवा ?

हास्य का हसगुल्ला

प्रस्तुति : हेमु मोदी *(सुरत)*

❒ कर्मचारी : सर मैंने अपने आधार कार्ड को अपने बैंक अकाउंट से लिंक भी नहीं करवाया, फिर भी मेरे अकाउंट में गैस की २०० रुपए सब्सिडी आ गई।
बॉस : वह सब्सिडी नहीं है, तुम्हारा इंक्रीमेंट लगा है।

❒ छगन : मैं यहां नहीं रहूंगा! इतना छोटा सा कमरा। ना तो कोई खिड़की है ओर ना बाथरूम! मुझे मेरे पैसे वापस चाहिए।
वेटर : लेकिन सर ये तो
छगन : नहीं-नहीं, मुझे पैसे वापस दे दो!
वेटर : अबे गंवार ऊपर रूम में तो चल, यह तो लिफ्ट है!

❒ भिखारी : भगवान के नाम पर कुछ दे दो।
लड़की : कुछ नहीं है बाबा, माफ करो।
भिखारी : कुछ नहीं तो अपना मोबाइल नंबर ही दे दो, बाबा दुआ भी करेगा और मैसेज भी!

❒ एक शराबी ने ९४.३ एफ.एम. पर फोन किया
शराबी : मुझे एस.वी. रोड पर एक पर्स मिला है जिसमे १५००० कैश, एक आईफोन ५ एक क्रेडिट कार्ड और किसी पल्लवी नाम की लड़की का आई.डी.मिला है
रेडियो जॉकी : वाह ! आप कितने ईमानदार हैंतो आप उन्हें वो पर्स वापस करना चाहेंगे - राईट ???
शराबी : नही !!! मै चाहता हूँ की पल्लवी जी के लिए एक दर्द भरा गाना हो जाए ।

❒ एक बार पप्पू जंगल से होकर गुजर रहा था । सामने पेड़ पर लटकते सांप को देखकर रुक गया और बोला: सिर्फ लटकने से कुछ नहीं होगा, मम्मी को बोलो कॉम्प्लान पिलाये !

❒ बंता अपनी गर्लफ्रेंड से बात करने की कोशिश में फोन करता है:
ट्रिंग ट्रिंग आंटी पायल है?
महिला : हां बेटा, दोनों पैरों में है। ■

प्रकाशन कॉ–ऑर्डिनेटर : समीर पारेख, *क्रिएटिव पेज सेटर्स,* घाटकोपर

तस्वीर बोल रही हैं जलाराम अन्नदान क्षेत्र की

जीवन ज्योत जलाराम अन्नदानक्षेत्र के तहत आम के मौसम में आमरस के साथ भोजन प्राप्त कर रहे कैंसरग्रस्त मरीज और मरीज के सेवा बरदासी।

तस्वीर बोल रही हैं अनुकंपादान की

आप दानवीर दाता के घर से आइ व्यायाम साइकिल कई रोगियों के उपयोग में आई ।

RNI. MAHHIN/2012/45662 Post Reg. MCE/141/2024-26.
Licence to Post Without Prepayment No. MR/TECH/WPP-208/EAST/2024-26.
Posted at Mumbai Patrika Channel Sorting Office, Mumbai- 400 001
Published and Posting on 15th of every month.

To,

तस्वीर बोल रही हैं वेदना और संवेदना की

चॉकलेट और काफी मेहनत से क्रोशिया से बनी रंगीन टोपी देकर
कैंसर पीड़ित बची के चेहरे पर खुशी लाने का प्रयास कर रहे
जीवन ज्योत संस्था के संस्थापक व मेनेजींग ट्रस्टी श्री हरखचंदभाई सावला (बाडावाला)।

Printed, Published, Edited & Owned by - **Mr. H. K. Savla,** Published from **Jeevan Jyot Cancer Relief & Care Trust,** 3/9, Kondaji Chawl, Jerbai Wadia Road, Near Tata Hospital, Parel, Mumbai - 400 012. & Printed at **P. H. Printer,** 18-P, D. L. Jain Compound, Opp. Voltas Ltd., 64, Dr. B. A. Road, Chinchpokli (E), Mumbai 400 012 ***Editor*** : **H. K. Savla**